

संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता, मनोबल एवं कार्यशैली का विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सोमेश नागदा¹, डॉ. खेलशंकर व्यास²

¹ शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

² शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में संचालित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता और कार्यशैली का उनके विद्यालयों की शैक्षणिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है और इसे उदयपुर एवं डूंगरपुर जिलों के चयनित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संपन्न किया गया। अनुसंधान हेतु कुल 50 विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को उद्देश्यपूर्ण न्यायद्वारा चयनित किया गया।

शोध में स्वनिर्मित एवं विशेषज्ञों द्वारा मान्य उपकरणों का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात (CR) जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

अध्ययन निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार और प्रबंधकीय प्रभावशीलता में समग्र दृष्टि से कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। तथापि, क्षमता उत्प्रेरक (Capacity Building) के आयाम में निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य राजकीय विद्यालयों की तुलना में अधिक प्रभावी पाए गए। इसी प्रकार, प्रबंधकीय प्रभावशीलता के कार्यात्मक, पारस्परिक और व्यक्तिगत आयामों में दोनों समूहों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यद्यपि दोनों प्रकार के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का सामान्य नेतृत्व व्यवहार लगभग समान है, किंतु निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अधिक प्रेरक क्षमता का प्रदर्शन करते हैं, जिससे विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त, शोध यह सुझाव देता है कि जनजातीय क्षेत्रों के राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को संगठित नेतृत्व और प्रबंधकीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाना आवश्यक है, ताकि उनकी प्रभावशीलता में वृद्धि हो और विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द: नेतृत्व क्षमता, कार्यशैली, प्रबंधकीय कौशल, जनजातीय विद्यालय, शैक्षणिक गुणवत्ता, राजस्थान

आमुख

विद्यालय में प्रधानाचार्य का स्थान अत्यंत केंद्रीय और महत्वपूर्ण है। वे अपने शैक्षणिक नेतृत्व और प्रबंधकीय कौशल के माध्यम से विद्यालय को निर्धारित लक्ष्यों की दिशा में मार्गदर्शित करते हैं। विद्यालय की उन्नति और गुणवत्ता में प्रधानाचार्य का योगदान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना खेल के मैदान में कप्तान या युद्ध के मैदान में सेनापति का। जैसा प्रधानाचार्य होगा, वैसा ही विद्यालय का शैक्षणिक और प्रशासनिक वातावरण होगा।

प्रधानाचार्य को अपनी भूमिका के निर्वहन के दौरान विभिन्न संबंधों और भूमिकाओं का संतुलन बनाए रखना पड़ता है। यदि इन संबंधों में समन्वय नहीं होता, तो संकट और समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। विचारों, दृष्टिकोणों और भावनाओं में असंतुलन के कारण द्वंद्व की संभावना बढ़ जाती है, जिससे प्रबंधकीय निर्णय और नेतृत्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में प्रधानाचार्य की नेतृत्व क्षमता और प्रबंधकीय कुशलता उनकी भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने की क्षमता का निर्धारण करती है।

जैसे घड़ी का स्प्रिंग, मशीन का पहिया या जहाज का इंजन कार्यप्रणाली का केन्द्र होते हैं, उसी प्रकार विद्यालय में प्रधानाचार्य विद्यालय की प्रमुख शक्ति और प्रेरक स्रोत हैं। वे न केवल संगठनकर्ता, संयोजक और पर्यवेक्षक हैं, बल्कि शिक्षक और विद्यार्थियों के मार्गदर्शक तथा शिक्षक समुदाय के नेता भी हैं। कुबर्ली (Kublerli) के अनुसार, प्रधानाचार्य केवल प्रशासक नहीं होता; उनका नेतृत्व तर्कशक्ति, प्रगाढ़ ज्ञान और अदम्य उत्साह पर आधारित होता है।

विद्यालय में एकता बनाए रखना, शैक्षणिक गतिविधियों में संतुलन स्थापित करना और विद्यालय को विकास के मार्ग पर अग्रसर करना प्रधानाचार्य की प्रमुख जिम्मेदारी है। शिक्षक, छात्र और अन्य कर्मचारी उनके व्यक्तित्व और प्रेरणा से प्रभावित होते हैं। इस दृष्टि से, प्रधानाचार्य की शैक्षणिक ज्ञान, नेतृत्व क्षमता और प्रबंधकीय कौशल विद्यालय की समग्र गुणवत्ता और शैक्षणिक परिणामों के लिए निर्णायक हैं। यदि वे नवीनतम शैक्षणिक सिद्धांतों और प्रयोगों से परिचित नहीं हैं, तो वे प्रभावी नेतृत्व और प्रबंधकीय निर्णय नहीं ले सकते।

इस प्रकार, विद्यालय प्रधानों की नेतृत्व क्षमता और कार्यशैली का जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता पर प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण और अध्ययन हेतु प्रासंगिक विषय है। यह शोध प्रधानाचार्यों के नेतृत्व और प्रबंधकीय कौशल का विश्लेषण करते हुए उनके शैक्षणिक परिणामों पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

शोध समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षकों के लिए अत्यंत आवश्यक है कि वे समाज और शिक्षा में हो रहे द्रुतगामी परिवर्तनों को समझें, उनका विश्लेषण करें और स्वाध्याय के माध्यम से अनुपयुक्त तत्वों को हटाएँ। अध्यापक का प्रमुख दायित्व सतत अध्ययन करना और स्वयं को शैक्षणिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना है। शिक्षा-शास्त्रियों के अनुसार, शिक्षा को अब वास्तविक धरातल पर आधारित होना चाहिए। यही वह उपयुक्त समय है जब शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को शैक्षणिक नवाचारों का नेतृत्व करना चाहिए ताकि सभी विद्यार्थियों को विश्व स्तरीय शिक्षा उपलब्ध हो सके।

हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, ज्ञान ही सत्य है क्योंकि यह संदेह और अज्ञानता को दूर करता है। शिक्षक इस ज्ञान के प्रेरक स्रोत हैं। शिक्षक के लिए अभिरुचि, चरित्र निर्माण के प्रति समर्पित भाव और विनम्रता ये तीनों प्रमुख गुण अनिवार्य हैं। आधुनिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैचारिक और तकनीकी परिवर्तनों के संदर्भ में, शिक्षक और प्रधानाचार्यों को नवीन तकनीकी उपकरणों और शैक्षणिक विधियों में प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। इसके साथ ही, विद्यार्थियों को भी अपनी जिज्ञासाओं को शिक्षकों के मार्गदर्शन में संतुलित रूप से शांत करने की आवश्यकता है। विद्यालय पाठ्यक्रम में भी नवीन परिवर्तन शिक्षकों द्वारा क्रियान्वित होने चाहिए।

शोध के उद्देश्य

1. जनजातीय क्षेत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन करना।
2. जनजातीय क्षेत्र में राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रबंधकीय कौशल का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएं

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर होगा।

सारणी 1: राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के मध्यमानों में अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह के प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S. D.)	क्रांतिक अनुपात मान (CR-value)	सार्थकता के स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	15	18.35	3.35	1.059	सार्थक अंतर नहीं है	सार्थक अंतर है
निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	40	17.45	4.59			

(df=N₁+N₂-2=15+40-2=43)

उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के प्राप्त अंकों के आधार पर मध्यमान क्रमशः 18.35 और 17.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.5 और 4.59 प्राप्त हुए हैं। दोनों समूहों के प्रधानाचार्यों के मध्यमानों और मानक विचलन के आधार पर क्रांतिक अनुपात (CR-value) की गणना की गई, जिसका मान 1.059 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के 43 अंश (df = 43) पर 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान 1.96 और 0.01 स्तर पर 2.59 है, जैसा कि तालिका में स्पष्ट किया गया है।

गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान दोनों स्तरों (0.05 एवं 0.01) पर निर्धारित सार्थकता मान से कम होने के कारण शून्य

2. पुरुष एवं महिला प्रधानाचार्यों की प्रबंधकीय कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

शोध उपकरण

चूंकि प्रस्तुत शोध के लिए मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं थे, इसलिए स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। उपकरण के प्रयोग से पूर्व इसे विशेषज्ञों के परामर्श अनुसार मान्य किया गया।

डेटा का संकलन और संगठन

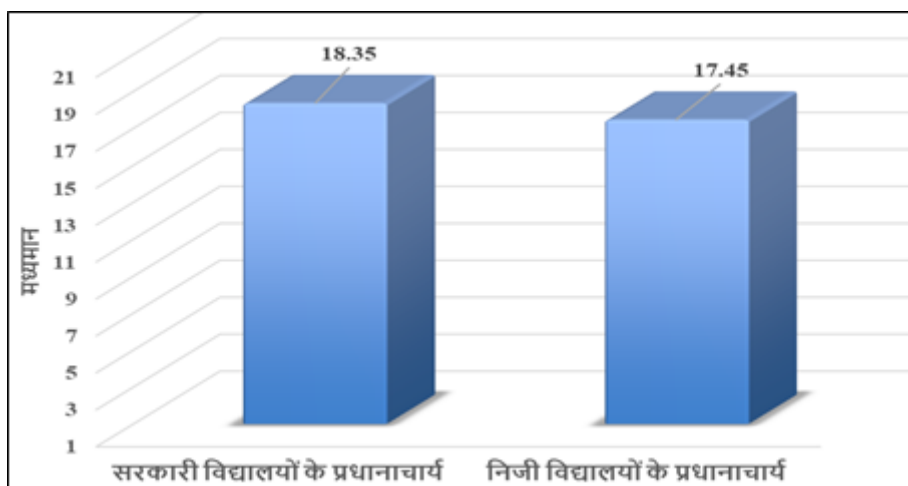
डेटा का संकलन शोध की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस शोध में विद्यालय स्तर पर प्रधानाचार्यों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से डेटा संग्रहित किया गया। इसके पश्चात डेटा को वांछित वर्गों में व्यवस्थित कर संगठित किया गया।

डेटा का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में डेटा का विश्लेषण करने हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। इनमें प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात (CR) शामिल हैं। शोध निष्कर्षों को सारणी और आरेख के माध्यम से स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पना (Null Hypothesis) को स्वीकार किया जा सकता है। इसका निष्कर्ष यह है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

इसके अतिरिक्त, तालिका में प्रदर्शित मध्यमानों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के मध्यमान लगभग समान हैं, जो इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार में समरूपता विद्यमान है। इस प्रकार यह अध्ययन यह इंगित करता है कि विद्यालय के प्रकार के आधार पर प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार में किसी प्रकार का अंतर प्रकट नहीं होता।



आरेख 1: राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के मध्यमान, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात (CR-value) का दंडरेखीय (Bar) प्रस्तुतीकरण।

सारणी 2: राजकीय निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व के क्षमता उत्प्रेरक के मध्यमानों के अन्तरो की सार्थकता की तुलना

समूह के प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S. D.)	क्रांतिक अनुपात मान (CR-value)	सार्थकता के स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	15	20.82	2.74	3.367	सार्थक अन्तर नहीं है	सार्थक अन्तर है
निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य	40	18.40	4.95			

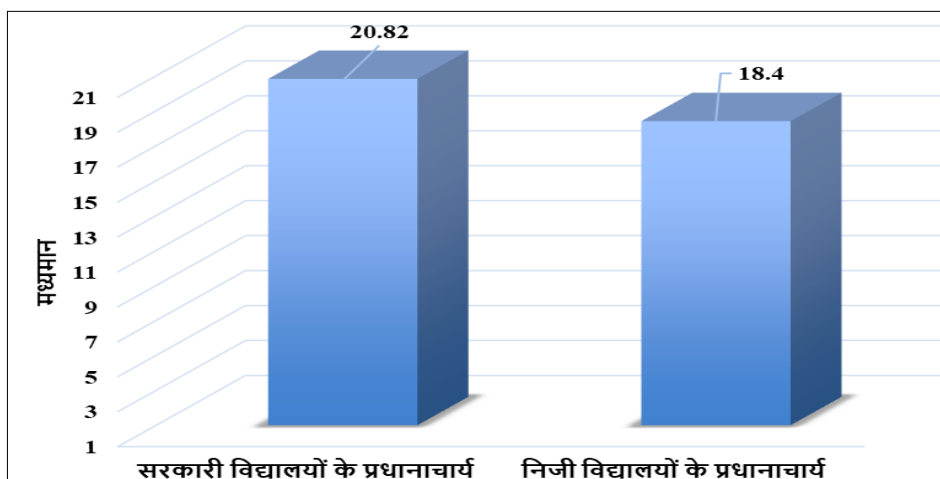
(df=N1+N2-2=15+40-2=43)

उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के क्षमता उत्प्रेरक के प्राप्त अंकों के आधार पर मध्यमान क्रमशः 20.82 और 18.40 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.74 और 4.95 प्राप्त हुए हैं। दोनों समूहों के प्रधानाचार्यों के मध्यमानों और मानक विचलन के आधार पर क्रांतिक अनुपात (CR-value) की गणना की गई, जिसका मान 3.367 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के 43 अंश (df = 43) पर 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान 1.96 और 0.01 स्तर पर 2.59 है, जैसा कि तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान दोनों स्तरों (0.05 एवं 0.01) पर निर्धारित सार्थकता मान से अधिक होने के कारण शून्य

परिकल्पना (छनसस भलचवजीमेपे) अस्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ यह है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के क्षमता उत्प्रेरक में सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है।

तालिका में दिए गए मध्यमानों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के क्षमता उत्प्रेरक के गुण राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की तुलना में अधिक हैं। यह परिणाम इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अपने नेतृत्व व्यवहार में अधिक प्रेरक और क्षमता-संपन्न हैं, जिससे उनके विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।



आरेख 2: राजकीय निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व के क्षमता उत्प्रेरक के मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात मान का दण्डारेखीय प्रदर्शन

परिकल्पनाओं का सत्यापन

परिकल्पना संख्या 1: "राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।"

इस परिकल्पना का परीक्षण तीन उप-परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया, जिसके परिणाम निम्नलिखित हैं:

H1(A): राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता का परीक्षण शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के छह आयामों के आधार पर किया गया, जिससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. प्रथम आयाम "क्षमता उत्प्रेरक" में राजकीय और निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया।

2. द्वितीय आयाम "टीम निर्माता" में अंतर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण पाया गया, जबकि 0.01 स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

3. तृतीय आयाम "निष्पत्ति आमुख" में दोनों समूहों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया।

H1(C): राजकीय एवं निजी विद्यालयों के महिला संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता का परीक्षण शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार के तीन आयामों के आधार पर किया गया, जिससे निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए :

1. प्रथम आयाम "क्षमता उत्प्रेरक" में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया।

2. द्वितीय आयाम "टीम निर्माता" में भी कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं देखा गया।
3. तृतीय आयाम "निष्पत्ति आमुख" में भी कोई सांख्यिकीय अंतर प्रकट नहीं हुआ।

परिकल्पना संख्या 2: "राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रबंधकीय कौशल में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।"

इस परिकल्पना का परीक्षण तीन उप-परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया, जिसके परिणाम निम्नलिखित हैं:

H2(A): राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रबंधकीय कौशल का परीक्षण प्रबंधकीय प्रभावशीलता के तीन आयामों के आधार पर किया गया, जिससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए:

1. प्रथम कारक "कार्यात्मक प्रभावशीलता" में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया।
2. द्वितीय कारक "पारस्परिक प्रभावशीलता" में कोई सांख्यिकीय अंतर नहीं देखा गया।
3. तृतीय कारक "व्यक्तिगत प्रभावशीलता" में भी कोई सांख्यिकीय अंतर प्रकट नहीं हुआ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट हुआ कि राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में संचालित राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार और प्रबंधकीय कौशल में समग्र रूप से कोई सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। तथापि, नेतृत्व के क्षमता उत्प्रेरक (Capacity Building) आयाम में निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य राजकीय विद्यालयों की तुलना में अधिक प्रभावी पाए गए। टीम निर्माता और निष्पत्ति आमुख जैसे अन्य आयामों में दोनों समूहों के बीच अंतर सीमित और असंगत पाया गया। महिला प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार का विश्लेषण भी समान रूप से यह दर्शाता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में उनके व्यवहार में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। प्रबंधकीय प्रभावशीलता के कार्यात्मक, पारस्परिक और व्यक्तिगत आयामों में भी अंतर नहीं देखा गया। शोध यह इंगित करता है कि निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अधिक प्रेरक क्षमता प्रदर्शित करते हैं, जिससे उनके विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त, यह सुझाव दिया गया है कि जनजातीय क्षेत्रों के राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को संगठित नेतृत्व और प्रबंधकीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि उनकी क्षमता में सुधार हो और विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता और परिणाम बेहतर हों। कुल मिलाकर, प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता और कार्यशैली का विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता पर प्रभाव महत्वपूर्ण और प्रासंगिक पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अलतेकर, ए. एस. (1959). प्राचीन भारत में शिक्षा. दिल्ली: भारतीय प्रकाशन गृह।
2. अरुणिमा, (1989). एक सामाजिक मनोविज्ञान के मूल्य निर्धारण में बच्चों के बीच आक्रामकता का अध्ययन. दिल्ली विश्वविद्यालय, मास्टर डिग्री शोध पत्र।
3. अस्थाना, विपिन & अस्थाना, श्वेता (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
4. काल्कर, डी. वैन (1972). नीदरलैंड में ग्रह संबंधी वातावरण बच्चों की विद्यालय हेतु तैयारी को कैसे प्रभावित करता है. शिक्षा मनोविज्ञान जर्नल, 15(2), 123-135।

5. कपिल, एच. के. (1996). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
6. कुदेसिया, उमेश चंद्र (2006). शिक्षा प्रशासन. पंचम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
7. कौल, लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
8. कोठारी, सी. आर. & कोठारी, लेला (1990). सांख्यिकी सिद्धांत एवं व्यवहार. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. गैरट, हेनरी ई. (1972). शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी प्रयोग. लुधियाना: कल्याणी पब्लिशर्स।
10. गोपाल, डी. प्रसाद (1992). शोध विधि विधान के मूल तत्व. पटना: भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
11. गुप्ता, एस. पी. - गुप्ता, अल्का (2008). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
12. गुप्ता, एस. पी. (1997). सांख्यिकी विधियां. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
13. प्रेसटन, जे. पी. & बार्न्स, के. ई. आर. (2017). Successful Leadership in Rural Schools: Cultivating Collaboration- Journal of Educational Administration, 55(1), 1-15- <https://files-eric-ed-gov/fulltext/EJ1225156-pdf>
14. क्लॉक, बी. (2019). Leadership Challenges of the Rural School Principal- Educational Leadership, 77(4), 22-27- <https://files-eric-ed-gov/fulltext/EJ1237556-pdf>
15. मंग, वी. (2024). The Effect of Perceived Principal's Instructional Leadership on the Occupational Well&being among Rural Elementary and Middle School Teachers- Open Psychology Journal, 17, 45-58. <https://openpsychologyjournal-com/VOLUME/17/ELOCATOR/e18743501317478/FULLTEXT/>
16. ट्रिबल रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, पुणे (2025). Tribal Education in India: A Review of Literature- पुणे: महाराष्ट्र सरकार। <https://trti-maharashtra-gov-in/index.php/en/>
17. नाजुडा, डी. सी. (2018). Ashram Schools and the Quality of Tribal Education in India- Indian Journal of Social Sciences, 12(2), 101-115- <https://iisjoss-org/sites/default/files/iisjoss/2018&19/PDF/1-pdf>
18. हुइट, जे. एल. प्प (2021). Exploring The Roles] Responsibilities, And Leadership Styles of Tribal School Leaders- University of New England Theses- <https://dune-une-edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1355&context=theses>
19. ट्रिबल रिसर्च एंड कल्चरल इंस्टीट्यूट (2025). Tribal Education in India. त्रिपुरा: त्रिपुरा राज्य आदिवासी संस्कृति अकादमी। <https://trci-tripura-gov-in/>
20. शर्मा, धीरेन्द्र & सिंह, विक्रम (2010). ICT in Universities of the Western Himalayan Region of India II: A Comparative SWOT Analysis. arXiv. <https://arxiv-org/abs/1002.1193>